Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

अध्यापक शिक्षा में आधारभूत नवीन अवधारणा

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

अध्यापक शिक्षा में आधारभूत नवीन अवधारणा

Mahaveer Kumar Sharma[1] Dr. M. K. Tiwari[2]

[1]Research Scholar, JJT University, Jhunjhunu & Distt. Education officer Central Secondary, bhilwara

[2]Principal, Mewad, Girls College, Teacher Training, Chittoda

----------X----------

प्राचीन भारत के गुरुकलों में आचार्य सामान्यतः राज परिवार के सदस्यों को आवासीय शिक्षा प्रदान करते है। इन आचार्यों को राजगुरु माना जाता था। समय के साथ गुरुकुलों का स्थान विद्यालयों एवं छात्रावासों ने लिया। यही नहीं गुरु भी अब शिक्षक के रुप में जाना जाता है। उस समय गुरु मौखिक शिक्षा ग्रहण करवाते थे और वे जन्मजात होते है । द्रोणाचार्य , वषिष्ठ , संदीपनी , विष्वामित्र आदि श्रेष्ठ गुरु हुए है। बुद्ध , ईसा , गॉधी , सुकरात , मुहम्मद , कनफ्यूशियस ये सभी भी सच्चे अर्थो में मानव जाति के शिक्षक थे ।

कोठारी आयोग ने कहा था कि " भारत के भावी नागरिकों का निर्माण विद्यालयों में हो रहा है। " शिक्षक बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर उसको सुयोग्य नागरिक बनाने हेतु मुख्य रुप से उत्तरदायी होता है। इसलिए राष्ट्र की प्रगति में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्राचीन भारतीय समाज एवं संस्कृति में तथा वर्तमान में भी षिक्षक अथवा गुरु का स्थान सदैव एक आदर्श मानव के रुप में रहा है। महर्षि अरविन्द के अनुसार " शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति का एक चतुर माली होता है , वह बालको में संस्कारों की जडों में खाद देकर महा–प्राण शक्तियॉ बनाता है। "

शिक्षक से अपेक्षा है कि वह बालक में विद्यमान मूल प्रवृतियों उसके कियाकलापों एवं कक्षागत व्यवहार का सूक्ष्म निरीक्षण और विश्लेषण करके उसका संवर्धन कर बालक की शक्तियों के अनुरुप पथ प्रदर्शक के रुप में अपने दायित्व का निर्वाह करें । शिक्षक के बारे में दो धारणाऍ प्रचलित है (।) शिक्षक जन्मजात होता है (।।) शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा तैयार किये जातें है। प्लेटो, अरस्तु, महात्मा गॉधी, स्वामी विवेकानंद, सुकरात व महर्षि अरविन्द आदि ऐसे ही जन्मजात शिक्षक थे । दूसरे वे जो प्रशिक्षण व अभ्यास से निर्मित किये जा सकते है।

आज यह महसूस किया जा रहा है कि शिक्षक बनने का कार्य पूर्ण रुप से व्यावसायिक हो गया है। हर कोई व्यक्ति अध्यापक बनना चाहता हैं परन्तु वह ठीक से प्रशिक्षण भी नहीं लेना चाहता है। ऐसा व्यक्ति पी.टी.ई.टी. उत्तीर्ण कर प्रशिक्षण प्राप्त करता है फिर शिक्षक अभिवृति परीक्षा (टेट) उत्तीर्ण कर प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण कर शिक्षक बनता है। परन्तु वह केवल विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर तथा कतिपय शिक्षण कौशलों को सीखकर शिक्षक कहलाता है। ऐसे शिक्षक राष्ट्र का उत्थान नहीं कर सकते है। इस स्थिति के लिए षिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं की बढती संख्या और वर्तमान प्रचलित पाठ्यक्रम भी जिम्मेदार है।

वर्तमान में प्रचलित " शिक्षक प्रषिक्षण कार्यक्रम " में शिक्षक को प्रायोगिक मॉडल आधारित तरीके से प्रशिक्षण प्रदान करने का उदेद्श्य होता है जिसमें प्रशिक्षणार्थियों को उनके चयन के पश्चात् शिक्षण अधिगम सिद्वान्तों का ज्ञान दिया जाता है। इन प्रशिक्षणार्थियों को ' अभ्यास शिक्षण ' हेतु विद्यालयों में भेजने से पूर्व शिक्षण की सूक्ष्म व वृहद् दोनों प्रकार की कुशलताओं को सिखाया जाता है। अभ्यास शिक्षण के दौरान वे एक या दो कक्षाओं को प्रतिदिन पढातें है और अगले दिन की तैयारी हेतु अपने संस्थान में लौट आते है। अभ्यास शिक्षण के समस्या समाधान के लिए उनके पर्यवेक्षक परामर्शक , प्राचार्य व विषय के व्याख्याता उपस्थित रहते है। इसीलिए उन्हें शिक्षण अधिगम से संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पडता है।

परन्तु प्रशिक्षण समाप्ति पर जब वे शिक्षक बनकर विद्यालयों में जाते है तब सही अर्थो में वास्तविक शिक्षण अधिगम परिस्थिति देखते है और इनसे संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पडता है । चूँकि उन्हें कक्षा कक्षों का संचालन करने और कक्षागत समस्याओं से निपटने का कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है।

अध्यापन शिक्षा का प्रचलित मॉडल निम्नानुसार है–

1. शिक्षण सिद्वान्तों का ज्ञान (प्रशिक्षण संस्था में)
2. अभ्यास शिक्षण (प्रायोगिक विद्यालयों में)
3. समस्याएं (शिक्षक बनने के बाद विद्यालयो में)

इस मॉडल के स्थान पर सेवा में प्राप्त अनुभव , साथियों से चर्चा एवं संदर्भित साहित्य के अध्ययन के आधार पर एक नवीन अवधारणा सोची गयी है। इस सम्प्रत्यय के अन्तर्गत रुचिषील व प्रयोगधर्मी संस्थाऍ पर्याप्त अभिप्रेरणा और उत्साह के साथ इस विचार को अध्यापक षिक्षा में लागू कर सकती है।

अध्यापक शिक्षा में आधारभूत नवीन अवधारणाः–

इस मॉडल में प्रचलित मॉडल को उल्टा करने का प्रयास किया गया है।

1. समस्याएं (प्रशिक्षणार्थी प्रायोगिक विद्यालयों में जाकर)
2. अभ्यास शिक्षण (प्रायोगिक विद्यालयों में)

www.ignited.in

3. शिक्षण सिद्वान्त(अनुभव के आधार पर स्वयं विकसित करेंगे)

प्रथम चरण के अन्तर्गत प्रशिक्षणार्थियों को विद्यालय में भेजा जाता है ताकि वे उन विद्यमान विद्यालयों व कक्षा कक्षों की परिस्थितियों और संदर्भो में से वास्तविक समस्याओं का स्वयं अनुभव प्राप्त कर सके । इस तरह से प्रशिक्षणार्थी विद्यालय व कक्षा कक्षों की वास्तविक समस्याओं से परिचित होते है। वे विद्यालय वातावरण कक्षाकक्षों , भवनों , क्रीडा मैदानों , विविध शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों का अवलोकन करते है। ऐसा करते समय वे सैद्वान्तिक ज्ञान के पूर्वाग्रह से रहित होते है। वास्तविक रुप से संचालित विद्यालय में रहकर वे स्वयं ही कक्षा कक्षों की अनेक बाध्य व आंतरिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यालय प्रबन्धन , शैक्षिक मनोविज्ञान , शिक्षा के सामाजिक व दार्षनिक आधार , शैक्षिक तकनीकी के संबंध में कुछ न कुछ सीखने का प्रयास करते है , इस प्रकार प्रशिक्षणार्थी धीरे धीरे विद्यालय संचालन , भौतिक , शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर लेते है।

द्वितीय चरण में प्रशिक्षणार्थी अपने हाल ही में प्राप्त ज्ञान व शिक्षा कौशल के आधार पर कक्षाओं में पढाने का अभ्यास करते है ,बच्चों से बाचचीत करते है , कुछ प्रयोग करते है , वे अपने स्तर पर नवाचार भी करते है और शिक्षण प्रकिया के जरिये वे थोडा सीखते है । जो उन्हें उचित लगता है वे वही करते है इस प्रकिया में गलतियॉ भी होती है । ये गतिविधियॉ कुछ महीनों तक चलती रहती है।

तृतीय चरण में प्रशिक्षणार्थी जो कुछ भी कर रहे है , उसका अभ्यास कुछ समय के लिए बंद कर देते है । उन्हें चिन्तन का अवसर दिया जाता है । अब तक जो उन्होने विद्यालयों और कक्षा कक्षों मे किया है वे उस पर विचार करते है उन्हें सकारात्मक चिन्तन हेतु प्रेरित किया जाता है । वे निम्न बिन्दुओ पर चिन्तन कर सकते है

(1) विद्यालय , कक्षा कक्ष व परिसर की भौतिक स्थिति

(2) छात्रों का व्यवहार (आपस में व उनके प्रति)

(3) उनके द्वारा पढाये गये शिक्षण बिन्दु

(4) पढाने की शिक्षण विधियॉ

(5) उनके शिक्षण के सकारात्मक पक्ष

(6) उनके शिक्षण के नकारात्मक पक्ष , विफलताएँ व कारण

(7) छात्रों के पूर्व ज्ञान व नवीन ज्ञान के मध्य संबंध स्थापित करना।

चतुर्थ चरण में प्रशिक्षणार्थियों को उनके स्वयं के अवलोकन एवं वास्तविक विद्यालय और कक्षा जगत में शिक्षण अभ्यास के आधार पर उन्हें स्वयं के शिक्षण और अधिगम के सिद्वान्तों की संरचना करने के लिए प्रेरित किया जाता है , यह इस नवीन अवधारणा का महत्वपूर्ण चरण है। वे अपने अस्पष्ट एवं बिखरे विचारों का संयोजन करते है , संप्रत्यय विकसित करते है इससे प्रशिक्षणार्थियों के मध्य एक सार्थक संवाद स्थापित हो जाता है और इस प्रकार वे आपस में विचारों का आदान प्रदान करके और चर्चाएँ एवं तर्क करके विद्यालय , कक्षा कक्ष , अधिगम शिक्षण , मूल्यांकन आदि मसलों के संबंध में एक दूसरे के अवबोध की अभिवृद्वि करते है।

पंचम सोपान में प्रशिक्षणार्थी स्वनिर्मित सिद्वान्तों के आधार पर आपसी चर्चा करते है । उन्हे शिक्षा के क्षेत्र में अद्यतन उपलब्ध ज्ञान के संबंध में तथा उन्हे अपने दृष्टिकोण को पूर्णरुप से प्रस्तुत करने की खुली छूट होती है तथा वे षिक्षण में हाल ही में शोध की गई जानकारी में मध्य अर्थपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास करते है।

वर्तमान में प्रचलित शिक्षण सिद्वान्तों को बिना किसी तार्किक आधार पर चुनौति दी जाये ऐसा उदेद्श्य नहीं है लेकिन अपने स्वयं के कक्षा कक्षों और विद्यालय जीवन से संबंधित अनुभवों की सहायता से उन्हें समझ कर स्वयं को थोडी सी श्रेष्ठतर स्थितियों में पहुँचायें । प्रषिक्षणार्थी भी पूर्ण रुपेण नवीन और क्रान्तिकारी दृष्टिकोण अपना सकते है । यह बात उन्हें नए शिक्षण कौषल प्रदान करने में सहायक होगी तथा वे शिक्षक बनने के बाद कक्षागत चुनौतियो से आसानी से निपट सकेगे। कभी कभी होशियार प्रशिक्षणार्थी भी शिक्षक बनने पर अपने आपको असहाय महसूस करते है उन्हें प्रशिक्षण काल में सीखा गया सैद्वान्तिक ज्ञान छलावा महसूस होने लगता है । छात्रों का शोरगुल , अनुशासनहीनता , अटपटे एवं विषय से परे प्रश्न एवं कभी कभी अनर्गल टिप्पणियॉ उन्हें सुनने को मिलती है । ऐसी स्थिति से निपटने में यह नवीन सम्प्रत्यय अवश्य सार्थक सिद्व होगा ।

सारांश रुप से कहा जा सकता है कि शिक्षक महाविद्यालयों में वर्तमान में प्रचलित शिक्षण सिद्वान्त नीरसता प्रदान कर रहे है । प्रशिक्षणार्थियों में नवीन ऊर्जा का संचार करने में प्रायः असफल है।

यद्यपि शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए महत्वपूर्ण उपाय किये जा रहे है परन्तु पत्राचार पाठ्यक्रमों, समानान्तर बी. एड. पाठ्यक्रमों, वोकेशनल बी.एड. पाठ्यक्रमों एवं बेतहाशा बढ़ रहे बी.एड. महाविद्यालयो ने शिक्षक शिक्षा को निम्नतम स्थिति में पहुँचा दिया है। एक ओर सरकार गुणवत्ता नियंत्रण पर बल दे रही है वहीं दूसरी ओर स्ववित्तीय स्त्रोतों पर बल दे रही है।

शिक्षक शिक्षा की स्थिति को सुधारने के लिए अन्य प्रयासों के साथ साथ इस नवीन संप्रत्यय पर भी विचार कर लागू करना होगा ताकि प्रशिक्षणार्थियों में नवीन ऊर्जा का संचार हो।

आइये , हम अध्यापक शिक्षा की इस नवीन अवधारणा को अपने महाविद्यालयों में मूर्त रुप प्रदान करें एवं राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् को भी सुझाव दें । सम्भवतः यह परिषद् ही आशा की किरण है जिसके प्रयासों से शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हो सके । यदि हम ऐसा कर सके तो प्रशिक्षणार्थी उच्च मनोबल , श्रेष्ठ शिक्षण कौशलों व अनुभवी शिक्षक की तरह विद्यालयों में कार्य करने में सफल होगें तथा वे इस बात पर गर्व भी कर सकेंगे कि यह बात उन्होने प्रशिक्षण काल में सीखी थी ।

संदर्भ –

1.पाठक पी.डी.–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ

2.नई शिक्षा , सितम्बर 2012

3.नई शिक्षा , फरवरी 2013